



4

मई-1, 2015

ओम शान्ति मीडिया



दिल्ली-कालका जी। 'एक शाम प्रभु के नाम' कार्यक्रम में सभी को राजयोग को अनुभूति कराते हुए ब्र.कु. सुजाता। मंचासीन हैं ब्र.कु. प्रभा, ब्र.कु. पीयूष, ब्र.कु. डौली व अन्य।



कुप्लु। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए कॉर्पोरेटिव बैंक की डायरेक्टर एवं जिला पार्षद सदस्य प्रेमलता ठाकुर, ब्र.कु. किरन, ब्र.कु. निम्मा तथा विभिन्न महिला मण्डल प्रधान।



कोटा जंक्शन। मंदर टेरेसा होम में ईश्वरीय संदेश देते हुए ब्र.कु. प्रीति।



रायगढा-ओडिशा। 79वीं त्रिमूर्ति शिव जयंती पर अपनी शुभकामनाएं देते हुए रतिकान्त बेहरा,सेकण्ड इन कमांडेंट,फ़ोर्थ बटालियन, सी.आर.पी.एफ.। मंचासीन हैं सुजाता पालो,काउंसलर एंड प्रेसीडेंट,तुमसे बी.जे.डी. तथा ब्र.कु. सोमती।



कुण्ड-रेवाड़ी। शिवरात्रि कार्यक्रम में नायब तहसीलदार राजकुमार रंगा को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. शक्ति,रजौरी गार्डन दिल्ली। साथ हैं ब्र.कु. कमलेश व ब्र.कु. रेनु।



दिल्ली-पांडव भवन। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर तेलगु इम्पलॉइज वेलफेयर एसोसिएशन की महिलाएं ब्र.कु. विजय को सम्मानित करते हुए।

जैसा वोओगे वैसा पाओगे, इस मशहूर लोक कथावत के आधार पर बचपन से ही हमें माता-पिता एवं शिक्षकों के द्वारा यह सीख दी जाती है कि अपना चरित्र एवं चाल चलन ऐसी रखें जो सभी के सम्मान एवं प्यार के पात्र आप बन सकें। इसीलिए जब कोई बच्चा शरारत करता है तो अमूमन लोगों से यही टिप्पणी सुनने को मिलती है कि इसके 'मां-बाप ने इसको शिष्टाचार नहीं सिखाया होगा, तभी ये ऐसा कर रहा है'। इससे इतना तो सिद्ध होता है कि हमारे आचरण या व्यवहार से हमारे संस्कारों का दर्शन होता है। इसीलिए यदि हम यह अपेक्षा रखते हैं कि हमारे साथ हमेशा सभी अच्छाई से पेश आए, तो उसके लिए फिर हमें भी सभी के साथ अच्छाई से पेश आने का संस्कार धारण करना होगा, क्योंकि यह तो दुनिया का दस्तूर ही है कि 'जैसा दोगे वैसा पाओगे'।

कई लोग अक्सर दूसरों के मन में अपनी छवि बनाने के ख्याल से सतही स्तर पर ही अच्छा बनने का ढोंग करते हैं और अपनी इस चतुराई या जालसाजी में कुछ हद तक कामयाब हो जाते हैं, किन्तु वैसा करने में वे 'जैसा वोओगे वैसा पाओगे' वाली कथावत को भूल जाते हैं और अपने ही भ्रम में अंदर ही अंदर खुश होते रहते हैं। उन्हें इस बात का जरा भी इल्म नहीं होता कि कर्म का सार्वभौमिक कानून सबसे सूक्ष्म स्तर पर संचालित होता है। अतः

जैसा बोएंगे वैसा पायेंगे...

- ब्र.कु. निकुंज,माटकापर,मुम्बई



समझदारी इसी में है कि हम वास्तविक रूप से सभी के प्रति अपने भीतर अच्छी भावनाएं रखें, क्योंकि जब हमारी भावनाएं शुद्ध होंगी, तब लोगों का व्यवहार भी अपने आप हमारे साथ अच्छा होगा।

आज नहीं तो कल उन्हें अपनी को हुई जालसाजी का फल उसी ही रूप में वापस मिलेगा। इसीलिए समझदारी इसी में है कि हम वास्तविक रूप से सभी के प्रति अपने भीतर अच्छी भावनाएं रखें, क्योंकि जब हमारी भावनाएं शुद्ध होंगी, तब लोगों का व्यवहार भी अपने आप हमारे साथ अच्छा होगा। याद रखें कि झूठे भ्रम का मुखौटा आज नहीं तो

कल सत्यता और शुद्धता के आगे फीका पड़ ही जाएगा। इसीलिए आप जो हो, जैसे भी हो, अंदर-बाहर समान ही रहें, ताकि लोगों के मन में किसी भी प्रकार को विभ्रान्ति पैदा न हो। सामान्यतः हमारे अंदर अपने करीबी एवं मित्रगणों के प्रति प्यार एवं शुद्ध भावना रखने को स्वाभाविक वृत्ति होती है। परन्तु उन लोगों का क्या, जो हमारे परिवार और दोस्तों के इस वृत्ति के बाहर हैं? बहुधा उन लोगों के प्रति हमारी भावनाएं एवं व्यवहार हमें उनसे हुए अनुभव के आधार पर बदलती रहती

हैं। हालांकि नैतिक रूप से यह गलत है, किन्तु हमारी अपनी व्यक्तिगत धारणा के वशीभूत हम यह दोहरा मापदंड अपने अंदर बना लेते हैं, जो हमें एक ही प्रकार को गलती करने वाले दो लोगों के प्रति अलग-अलग प्रतिक्रिया देने को मजबूर कर देता है। मसलन, यदि हमारा अपना बच्चा हमारे - शेख पेज 8 पर

सोचने का ढंग बदलो, नया रास्ता निकलेगा

प्रश्न:- जब भी हमें लगने लगे कि खुद को कमलोट करने के लिए हमें कुछ और चाहिए। तो खुद को आप याद दिलाओ कि मैं एक चैतन्य शक्ति हूँ, मैं कमलोट हूँ, मैं खुश हूँ। कभी-कभी मुझे ऐसा क्यों लगता है कि मैं अधूरी हूँ?

उत्तर:- अगर हमारे जीवन में किसी के साथ कोई रिश्ता टूट जाये तो हमें ऐसा लगता है कि हम उनके बिना अधूरे हैं। और ऐसा लगता है कि हमारा पूरा जीवन ही खाली-खाली हो गया है।

प्रश्न:- ये जो अधूरापन है ये हमसे बहुत कुछ करवा लेता है।

उत्तर:- इस अधूरापन को ही हम 'खालीपन' कहते हैं। कहते हैं ना कि अंदर हीलो फील हो रहा है। हीलो अर्थात् अंदर खालीपन है। क्यों खालीपन है? क्योंकि हम बाहर दृढ़ रहे हैं। और बाहर दृढ़ने के चक्कर में हम कौन से विचार निर्मित कर रहे हैं, ये होता तो... ये होता तो... तो ये किस तरह के विचार हैं? नकारात्मक विचार हैं। ये हमारी ऊर्जा को नष्ट करता है। हम सकारात्मक विचार निर्मित करके ही नकारात्मक विचारों से बच सकते हैं और स्वयं को भरपूर अनुभव कर सकते हैं।

जैसे ही हम सकारात्मक विचार निर्मित करना शुरू करते हैं, तो हम मुक्त अनुभव करते हैं। नहीं तो हम हमेशा किसी न किसी पर, किसी पद पर, वस्तु पर, धन पर निर्भर हो रहते हैं। और एक जो हमने बहुत महत्वपूर्ण बात को कि हम भविष्य में क्यों जाते हैं? क्योंकि वर्तमान में कोई न कोई बाधा है, कोई न कोई परिस्थिति है, कोई न कोई रुकावट है। और

वो रुकावट मेरे अंदर दर्द क्रियेट कर रहा है। तो मैं क्या करती हूँ, आगे के बारे में सोचना शुरू कर देती हूँ, तो मैं तुरंत ही दर्द से हल्कापन महसूस करती हूँ। क्या हम इसे वर्तमान में कर सकते हैं? वर्तमान समय में जो बाधा आयी है उसका सामना करने के लिए



ब्र.कु. शिवानी

मुझे कौनसा विचार निर्मित करना पड़ेगा, यह बाधा नहीं है।

प्रश्न:- सामना तो फिर भी करना ही पड़ेगा ना।

उत्तर:- मुझे सामना तो करना ही है, लेकिन सामना कैसे करना है ये हमें समझना है। मैं ऐसे विचार निर्मित करूँ जिससे मुझे वो बाधा लगे ही नहीं। इसके लिए सिर्फ एक विचार निर्मित करो कि वो वास्तव में मेरे रास्ते में है ही नहीं। हम कहते हैं ना कि ये मेरे रास्ते में है खड़ा है, ये वास्तव में मेरे रास्ते में है ही नहीं। यह जो परिस्थिति आयी है वो इसलिए आयी है कि मुझे एक नया रास्ता अपनाना है। हम सड़क पर जा रहे हैं और बीच में एक बहुत बड़ा पत्थर है। अब हम पत्थर को कहें कि यह पत्थर मेरे रास्ते में है और हम रुक जायें, नहीं। वो मेरे रास्ते में नहीं है बल्कि हमने जो रास्ता चुना है वो वैसा ही है।

प्रश्न:- वास्तव में वो पत्थर मुझे सही रास्ता दिखाने के लिए ही आया है।

उत्तर:- हम क्या करते हैं? हम रुक जाते हैं। मान लो रोड डिव्हाइडर आता है, रोड

डिव्हाइडर क्या है? जैसे रास्ते में एक बैरियर लगा है तो हम वहां खड़े हो जाते हैं। अब मान लो यहाँ बैरियर है, अब हम आगे नहीं जा सकते, हमें रुकना नहीं है, हमें उसके आस-पास रास्ता ढूँढना है कि मेरा रास्ता क्या है। वित्तीय संकट आया, यह कोई अवरोध नहीं है। हमें इसके लिए दूसरा रास्ता तलाशना चाहिए कि इससे निकलने का रास्ता कौन सा है। उससे क्या होगा, मेरे सोचने का ढंग बदल जायेगा।

प्रश्न:- जो हताशा होने वाले विचार होते हैं वो खत्म हो जायेंगे। जैसे ही रास्ते में कोई पत्थर आ जाता है तो हम फिर भी रास्ता ढूँढ ही लेते हैं। उसी तरह से हमें लगाता है कि ये बहुत बड़ी समस्या है जिससे मुझे जूझना है। लेकिन उसकी हम उपेक्षा तो कर सकते हैं।

उत्तर:- वो कुछ है ही नहीं। जो परिस्थिति आयी है वो तो रहेगी ही। वो आयी ही है इसीलिए कि ताकि मैं अपनी सोच को एक नयी दिशा दे सकूँ। उसमें बाधा नहीं बल्कि एक अवसर समझकर पार करें।

प्रश्न:- लेकिन अगर उसको एक अवसर देखेंगे तब ना।

उत्तर:- जैसे ही उसको अवसर के रूप में देखेंगे तो हमारे सोचने का ढंग ही बदल जाता है और हम सहजता से उस परिस्थिति को पार कर लेते हैं। जब आप परिस्थिति को पार कर लेते हैं तो आपको लगता है कि ये परिस्थिति तो कुछ भी नहीं थी और हमने उसे इतना बड़ा मान लिया था। जैसे ही परिस्थिति आती है तो वह आपसे जनाब चाहती है। जीवन में परिस्थितियाँ इसलिए आती हैं कि वो हमारे क्रियेटिव रिस्पांस को बढ़ा सके।

